प्रा. डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार

हिंदी भाषा की विशेषताएँ

हिंदी भाषा के उज्ज्वल स्वरूप का ज्ञान कराने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी गुणवत्ता, क्षमता, शिल्प-कौशल और सौंदर्य का सही-सही आकलन किया जाए। यदि ऐसा किया जा सके तो सहज ही सबकी समझ में यह आ जाएगा कि हिंदी भाषा की अनगिनत विशेषताएँ हैं -

संसार की उन्नत भाषाओं में से एक

विश्व की लगभग 3000 भाषाओं में से हिंदी भाषा अपने व्याकरण और सरलता के कारण उन्नत भाषाओं में से एक है।

हिंदी भाषा सबसे अधिक सरल भाषा है

हिंदी भाषा सबसे अधिक सरल भाषा है क्योंकि यह जैसा लिखा जाता है वैसा ही पढ़ा जाता है। इसमें मूक (Silent) ध्वनियाँ नहीं होतीं हैं।

हिंदी भाषा सबसे अधिक लचीली भाषा है

हिंदी अपनी उदारता के कारण विश्व की अन्य भाषाओं के शब्दों को अपने में समाहित कर लेती है। इसलिए हमें हिंदी शब्दकोश उर्दू, अरबी फारसी चीनी, जापानी, पुर्तगाली, अंग्रेजी आदि के अनेक शब्द मिलते हैं।

हिंदी तीव्रता से प्रसारित हो रही भाषा है

हिंदी दुनिया की सर्वाधिक तीव्रता से प्रसारित हो रही भाषाओं में से एक है। भारत के अलावा नेपाल, मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, यूगांडा, दक्षिण अफ्रीका, कैरिबियन देशों, ट्रिनिडाड एवं टोबेगो और कनाडा आदि में बोलने वालों की अच्छी खासी संख्या है। इंग्लैंड, अमेरिका, मध्य एशिया में भी इसे बोलने और समझने वाले अच्छे खासे लोग हैं।

हिंदी भाषा के नियम अपवादविहीन हैं

हिंदी एक मात्र ऐसी भाषा है जिसके अधिकतर नियम अपवादविहीन है। हिंदी भाषा का व्याकरण संस्कृत व्याकरण पर आधारित होने के कारण इसमें अपवादों (Exceptional Cases) की संख्या लगभग न के बराबर है।

विश्व भाषा बनने की पूर्ण अधिकारी है

हिंदी भाषा सच्चे अर्थों में विश्व भाषा बनने की पूर्ण अधिकारी है। हिंदी भाषा की सरलता और सुगमता के कारण, साथ ही साथ इसमें उच्चारण को लेकर दुरूहता नहीं है, जैसे अंग्रेजी में Cheque, Chemistry, Cell पहले में 'च' दूसरे में 'क' और तीसरे में 'स' का उच्चारण हो रहा है।

हिंदी का शब्दकोश अत्यधिक विशाल है

अंग्रेजी में केवल Uncle या Aunt मगर हिंदी में रिश्ते नातों के लिए भरपूर शब्द हैं इसी प्रकार खाने-पीने की सामग्री या भाव व्यक्त व्यक्त करने के लिए सैकड़ों शब्द हैं। इसके अतिरिक्त इसे अपनी माँ संस्कृत का भी समर्थन प्राप्त है।

देवनागरी लिपि अत्यंत वैज्ञानिक है

देवनागरी लिपि पूर्णत: वैज्ञानिक है और वर्णों के उच्चारण स्थान क्रमानुसार और व्यवस्थित हैं। हिंदी में लगभग सभी प्रकार के उच्चारण संभव है।

हिंदी की शब्दसंपदा

हिंदी को संस्कृत शब्दसंपदा एवं नवीन शब्द-रचना-सामर्थ्य विरासत में मिली है। वह देशी भाषाओं एवं अपनी बोलियों आदि से शब्द लेने में संकोच नहीं करती। अंग्रेजी के मूल शब्द लगभग 10000 हैं, जबकि हिंदी के मूल शब्दों की संख्या ढाई लाख से भी अधिक है। हिन्दी में उपसर्ग, प्रत्यय और संधि से भी शब्द निर्माण होता है।

हिंदी बोलने एवं समझने वाले

भारत की 65 करोड़ जनता हिंदी लिख पढ़ और बोल सकती है जबकि 80 करोड़ जनता हिंदी समझ सकती है और अगर वैश्विक स्तर पर बात की जाए तो लगभग 200 करोड़ लोग इस भाषा को समझ सकते हैं। (2019 तक के आँकड़े)

वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा

दुनिया की सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में चीनी, अंग्रेजी, स्पेनिश और अरेबियन है और इसके बाद हिंदी का पाँचवाँ स्थान है। मगर हरियाणवी, भोजपुरी, मगही आदि बोलियों को हिंदी भाषा के अनर्गत रख लिया जाए तो हिंदी भाषा का स्थान तीसरा हो सकता है।

हिंदी का साहित्य सभी दृष्टियों से समृद्ध है

'रामचरितमानस' हो या 'गोदान' साहित्य की दृष्टि से यह भाषा श्रेष्ठ साबित होती है। हिंदी की बहुत-सी कालजयी रचनाएँ अनेक भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं।

हिंदी आम जनता से जुड़ी भाषा है

हिंदी आम जनता हिंदी से जुड़ी हुई है। हिंदी कभी राजाश्रय की मोहताज नहीं रही। इसका कारण इसकी सरलता ही है। मुख-सुख और सरल व्याकरण से अनुशासित होने के कारण यह लोकप्रिय हो गई और फिल्मों और धारावाहिकों ने तो इसे भारत की सीमाओं के परे ले जाने में बहुत मदद की है।

भारत की राजभाषा

14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी भारत की राजभाषा (Official Language) घोषित की गई थी। भारतीय संविधान की धारा 343 से लेकर 351 तक हिंदी से जुड़े अनेक प्रावधानों की व्याख्या है।

हिंदी भाषा का उज्ज्वल पक्ष

हिंदी भाषा इतनी अच्छी भाषा है कि विदेशी भी हिंदी भाषा की प्रशंसा और इसका प्रचार-प्रसार करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा चुके हैं जैसे, फादर कामिल बुल्के ने हिंदी शब्दकोश पर काम किया, हंगरी की मारिया नैज्यैशी ने हिंदी का प्रचार किया, हिंदी भाषा का इतिहास फ्रांसीसी लेखक गार्सा दा तासी ने सबसे पहले लिखा, हिंदी और दूसरी भाषाओं पर पहला विस्तृत सर्वेक्षण एक अंग्रेज सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने किया।

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता . गेवराई जि . बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

इस व्हिडियों / PPT का उदेश्य केवल अध्यापन के लिए है, न कि प्रसिद्धी पाने के लिए। इसका समग्र श्रेय सभी महानुभवों को जाता है जिन-जिनकी सामग्री का उपयोग यह बनाने के लिए हुआ है। मैं उन समस्तजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुँ जिनकी सामग्री का उपयोग यह व्हिडियों / PPT के लिए हुआ है। यह मेरी कोई मौलिक उपलब्धी नहीं है और न ही कोई सृजनात्मकता। इस का उदेश्य केवल और केवल छाञों तक पहुँचाना हैं। इससे किसीके दिल को प्रत्यक्ष या परोक्षरुप से कोई ठेस या आहत पहुँचती है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हुँ - आपका प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता . गेवराई जि . बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर